❑ वर्ष : 2021 ❑ माह : जनवरी ❑ अंक : 1 ❑ दिल्ली

आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन

जनसंवाद

किसान की खुशहाली की ओर एक प्रयास...

संदेश

प्रिय पाठकों,

वर्ष 2020 इतिहास के पन्नों में विलीन हो गया है। पूरे वर्ष कोरोना की महामारी के भय ने इंसान को सुरक्षा की सीमा के दायरे में बांध के रखा। एकाकी जीवन में ''संवाद'' के महत्व की आवश्यकता जनसाधारण की अपेक्षाओं की पूर्ति हेतु समस्याओं के विकल्प ढूंढ़ने के लिए हम सबका एक सूत्र में बंधना वांछनीय है।

नववर्ष 2021 में चुनौतियां अनन्य हैं एवं उनके निदान के लिए आपके साथ विचार विमर्श, तथ्यों को वैज्ञानिक दृष्टि से जांच परख करके समस्याओं के हल का विकल्प आपके साथ साझा करने के उद्देश्य से ''ARF जन संवाद'' पत्र की प्रथम प्रति आपको अर्पित कर रहा हूं।

प्राचीन समय से ही ऐसी मान्यता रही है कि स्वस्थ जीवन की बुनियाद स्वस्थ पर्यावरण, मिट्टी, वायु, जल के संसाधन स्रोतों, जंगल, वनस्पतियां एवं स्वस्थ पशु स्वास्थ्यवर्द्धक खान पान से रहा है। शतायु भवः एवं निरोगी काया को सबसे बड़ा धन माना गया है।

आज के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जहां ''प्रदूषण'' एक सर्वव्यापी शब्द बन गया है तथा इसका दुष्प्रभाव न केवल जनस्वास्थ्य पर अपितु समस्त जीवनदायी पंच तत्वों (पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि एवं आकाश) एवं पर्यावरण पर एक नई चुनौती के रूप में विषम समस्या बन गई है।

घटते प्राकृतिक संसाधनों, बढ़ती जनसंख्या, जलवायु परिवर्तन की वीभत्सता, दिनोदिन घटते रोजगार के अवसर, कृषि एवं पशुपालन से जुड़ी तमाम समस्याओं के समाधान ढूंढ़ने में आपकी संस्था 'आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन' ने गत पंद्रह वर्षों में आपके साथ मिलकर ज्ञान, विज्ञान एवं तकनीक की समझ से लगभग सभी समस्याओं का हल निकाल लिया है।

इस जनसंवाद पत्र के माध्यम से आपके अनुभव, आपके प्रयोग, निष्कर्ष, आपकी खोज, आपकी पहल आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन से जुड़े सभी अन्य सदस्यों तक पहुंचेगी एवं लाभ प्रदान करेगी।

मेरा ऐसा विश्वास है कि हम सब मिलकर इस नववर्ष के अवसर पर एक नई शुरूआत करेंगे। आपका साथ हमारा प्रयास वर्तमान की समस्याओं का सरल हल निकालने में सफल होगा।

शुभकामनाओं के साथ, आपके सहयोग का आकांक्षी।

मोहनजी सक्सेना
मैनेजिंग ट्रस्टी

प्रधान संपादक: **मोहन जे. सक्सेना**, सम्पादक: **डॉ. अनूप कालरा**, संपादक मंडल : **प्रवीण कुमार शुक्ला एवं रीटा शर्मा**
संपादकीय सदस्य: **डॉ. अनिल कनौजिया, डॉ. दीप्ति राय, डॉ. राघवेंद्र कौरव, जैनेंद्र गुप्ता, रंजन कुमार राकेश**, डिजाइन: **अमित बहल**
कार्यालय: आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन, सागर प्लाजा, चतुर्थ तल, लक्ष्मी नगर डिस्ट्रिक सेंटर, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092
दूरभाष: ईमेल: **info@arfmail.in,** संपर्क सूत्र: **011-22455993**

आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन द्वारा सोनीपत में मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना का शुभारंभ

हरियाणा सरकार द्वारा एआरएफ को सोनीपत के बडोदा मोड गांव में 3000 मृदा नमूनों के परीक्षण की स्वीकृति प्रदान की गई हे। पूरे सोनीपत जिले में एआरएफ एकमात्र ऐसी संस्था है, जिसे VLSP (Village Level Soil Testing Project) की स्वीकृति प्रदान की गई है।

इस परियोजना का शुभारंभ दिनांक 28 अक्टूबर 2020 के ARF R&D सेंटर पर हरियाणा सरकार के संबंधित अधिकारियों एवं किसानों की उपस्थिति में किया गया है। उपस्थित मृदा विशेषज्ञों एवं एआरएफ के वैज्ञानिकों ने परियोजना से होने वाले लाभ के बारे में किसानों को अवगत कराया एवं इसमें उनके सहयोग एवं लाभ प्राप्ति के लिए प्रेरित किया। दिसंबर महीने तक 3000 एकड़ कृषि भूमि से मृदा नमूनों को एकत्रित कर लिया गया है एवं उनकी जांच प्रक्रिया प्रयोगशाला में चल रही है।

परियोजना का उद्घाटन समारोह

मिट्टी के नमूने लेते हुए टीम सदस्य

डिप्टी कमिश्नर एवं एस.पी. सोनीपत का आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन में आगमन

श्री श्याम लाल पुनिया, डिप्टी कमिश्नर (सोनीपत) एवं श्री जशनदीप सिंह रंधावा, एस. पी. (सोनीपत) ने ARF R&D सेंटर का भ्रमण कर आयुर्वेट रिसचफ फाउंडेशन द्वारा चलाई जा रही किसान एवं पशुपालक हितकारी गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त की एवं ARF के किसान हित में किए गए विभिन्न प्रयासों की सराहना की।

श्री श्याम लाल पुनिया, डिप्टी कमिश्नर एवं श्री जशनदीप सिंह रंधावा, एस. पी. ARF R&D सेंटर का भ्रमण करते हुए

पशु स्वास्थ्य अधिकारियों ने किया ARF R&D सेंटर का भ्रमण

आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन द्वारा कृषि और पशुपालन के क्षेत्र में किए जा रहे विभिन्न प्रयासों को हर वर्ग के लोगों की सराहना प्राप्त हो रही है। पशुस्वास्थ्य के संबंध में एआरएफ द्वारा युवाओं को स्वरोजगार के लिए प्रशिक्षण दिया जा रहा है। साथ ही साथ दूध एवं

डॉ. रोहतास एवं डॉ. वितिन ARF R&D सेंटर का भ्रमण करते हुए

दुग्ध उत्पादों की गुणवत्ता संबंधित विभिन्न जांच की सुविधा ARF R&D सेंटर में उचित मूल्य पर उपलब्ध कराई जाती है। आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य केंद्र पर पशुओं को स्वास्थ्य सुविधाएं एवं कृत्रिम गर्भाधान की सुविधा उपलब्ध कराई जाती है। इन्हीं सुविधाओं की जानकारी प्राप्त करने के संबंध में डॉ. रोहतास एवं डॉ. वितिन, पशुचिकित्सक पशुस्वास्थ्य विभाग, हरियाणा सरकार ने ARF R&D सेंटर का भ्रमण किया एवं संबंधित सुविधाओं की जानकारी प्राप्त की।

औषधीय पौध

एआरएफ द्वारा किसानों को औषधीय पौधों की खेती के लिए प्रशिक्षण

नीम पौधे के औषधीय गुणों से हम सभी वाकिफ हैं। नीम के पेड़ हमारे आसपास हर जगह उपलब्ध भी हैं। पर जानकारी के अभाव के कारण किसान इसे अपना आमदनी का स्रोत नहीं बनाते। श्री योगेश कपूर एवं श्री रंजन राकेश द्वारा उत्तर प्रदेश के बागपत जिले के बड़ौत में 30 किसानों को नीम के पत्ते संबंधित कटाई एवं प्रबंधन पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इसी दिशा में सोनीपत के चिडाना गांव में स्वयं सहायता समूह की महिलाओं एवं किसान उत्पादक कंपनी से जुड़े किसानों से गिलोय औषधि का संग्रह भी किया गया। इससे किसानों को अतिरिक्त आय का अवसर भी प्राप्त हुआ।

किसानों का मार्गदर्शन करते हुए औषधीय पौध विशेषज्ञ

गिलोय औषधि का संग्रह

कृषि

गेहूं की ज्यादा पैदावार वाली किस्में DBW-187 और DBW-222

ए.आर.एफ. किसानों के लिए फसल की नई तकनीक साझा करने एवं उनकी आमदनी बढ़ाने की दिशा में सतत् प्रयत्नशील है। इसी दिशा में गेहूं को दो नई प्रजातियां DBW-187 और DBW-222 को प्रदर्शन क्षेत्र में लगाया है। DBW-187 जिसे **करण वंदना** और DBW-222 जिसे **करण नरेंद्र** का नाम दिया गया है, यह दोनों प्रजातियां ''भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान (IIWBR), करनाल द्वारा विकसित की गई है।

DBW-187 (करण वंदना)

DBW-222 (करण नरेंद्र)

DBW-187 (करण वंदना) प्रजाति इसलिए खास है, क्योंकि मौजूदा HD-2967, HD-2733, K-1006 की तुलना में इस किस्म की पैदावार सबसे अधिक है। DBW-187 को अक्टूबर से दिसंबर तक बोया जा सकता है। यह बात इसे और खास बनाती है। इसकी उपज 48.8 q/h से 64 q/h तक हो सकती है। जबकि अन्य गेहूं की किस्मों में 4-6 सिंचाई की आवश्यकता होती है। इस किस्म को 2-3 सिंचाई की ही आवश्यकता है। औसत ऊंचाई करीब 100 से.मी. है और 120 दिन में यह पक कर तैयार हो जाती है। यह किस्म Zn (जिंक) और Fe (आयरन) से भरपूर है और इसकी रोटी की गुणवत्ता बहुत बेहतर है। यह किस्म अभी तक सर्वाधिक पैदावार वाली गेहूं की किस्मों में शामिल हो गई है।

DBW-222 या **करण नरेंद्र** भी एक अत्यंत उन्नत किस्म है। इसमें भी पानी की आवश्यकता कम है। जिन क्षेत्रों में जलस्तर तेजी से घट रहा है, यह किस्म किसी वरदान से कम नहीं। यह किस्म किसानों के लिए 2019 में लाई गई है। इसकी बुआई 25 अक्टूबर से 25 नवंबर तक करना चाहिए। बीज करीब 40 कि.ग्रा./एकड़ की दर से डालना चाहिए। इसकी जड़ गहराई तक जाती है, इसलिए तेज हवा चलने पर भी इसका पौधा गिरता नहीं है। फसल पकने में करीब 143 दिन लगते हैं। इसकी उपज भी काफी ज्यादा है। इस किस्म की औसत उपज 69 q/hac से 80 q/ha तक हो सकती है।

हाइड्रोपोनिक्स विधि से धान उगाई, बचाया पानी, समय और बढ़ी कमाई

खरीफ 2020 में आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन द्वारा हाइड्रोपोनिक्स धान की नर्सरी का उत्पादन किया गया। करीब 7-10 दिन में तैयार नर्सरी को 84 किसानों के खेतों में मैकेनिकल ट्रांसप्लांटर द्वारा प्रत्यारोपित किया गया है। 101 एकड़ जमीन में रोपाई की गई। किसान आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स तकनीक द्वारा उत्पादित नर्सरी एवं उसकी मौलिक रोपाई से प्रसन्न थे क्योंकि इससे उनकी नर्सरी और लेबर की समस्या का समाधान हुआ। एक एकड़ की रोपाई में मात्र 40 मिनट का समय लगा।

ARF संस्था पिछले तीन वर्षों से नाबार्ड के सहयोग से इस प्रोजेक्ट को क्रियान्वित कर रही थी। इस वर्ष 84 किसानों ने इस तकनीक को अपनाया और लाभ लिया।

हाइड्रोपोनिक्स धान की नर्सरी की रोपाई

तैयार फसल की कटाई

पशुपालन

सर्दियों में पशुओं की देखभाल

जैसा कि हम सभी जानते कि सर्दियों में हमारे यहां तापमान 5-6 डिग्री से 22 डिग्री तक होता है इस तापमान में पशुओं से अत्यधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। वहीं पशुओं को ठण्डी हवाओं के प्रकोप से बचाना भी जरूरी है। इसलिए सर्दियों में पशु आवास का विशेष महत्व है। सर्दियों में पशुशाला में प्रत्येक गाय भैंस के लिए कम से कम 5.5 फीट चौड़ी एवं 10 फीट लम्बी पक्की जगह होनी चाहिए पशुशाला का फर्श खुरदरा होना चाहिए। नाली के लिए सही ढलान होनी चाहिए, जिससे पशु मलमूत्र आसानी से निकल जाता है। पशुशाला की छत 10 फीट ऊंची होनी चाहिए यह ईंट या फूस की हो सकती है।

पशुशाला की दीवार 4 से 5 फीट ऊँची होनी चाहिए बाकी के भाग में जाली लगाई जा सकती है, जिससे दिन के समय सूर्य कि रोशनी उसमे प्रवेश कर सके। सर्दियों में रात के समय इस जाली वाले भाग में टाट/बोरों को सिलकर पर्दा लगाये जिससे ठण्डी हवाओं से पशुओं को बचाया जा सके।

पशुशाला की पश्चिमी दीवार पर 2 फीट चौड़ा नाँद बनाना चाहिए। नाँद के साथ स्वच्छ जल की व्यवस्था होनी चाहिए। पानी के नाँद को सप्ताह में दो दिन चूने से पोत दें, जिससे पशुओं में कैल्शियम की कमी नहीं होगी, चूकि दुधारू पशुओं मै कैल्शियम कि आवश्यकता अधिक होती है, इसलिए सभी दुधारू पशुओं को 50 मि.ली. प्रतिदिन कैलधन वी-5 आवश्यक रूप से दे। हमारे इन प्रयासों से पशुओं को इस मौसम में होने वाली विभिन्न प्रकार की बीमारियों से बचाया जा सकता है। सर्दियों में खास कर नवजात पशुधन को सर्दी से बचाने के लिए फर्श पर पुवाल का बिछावन डालें तथा इसको समय-समय पर बदलते रहें तथा जिससे इसमें नमी न आयें।

सर्दियों में पशु पोषण

एक वयस्क पशु प्रतिदिन 6 किलो सूखा चारा तथा 15 से 20 किलो तक हरा चारा खिलाना चाहिए। फलीदार तथा बिना फलीदार हरे चारे को समान अनुपात में मिलाकर खिलाना चाहिए। हरे चारे कि फसल को जब आधी फसल में फूल आ जाये तब काटकर खिलाना पौष्टिकता की दृष्टि से उपयुक्त रहता है। पशुओं को चारा काटकर खिलाना लाभदायक होता है। सुखा चारा, हरा चारा, पशु आहार एवं खनिज मिश्रण(आयुमिन वी5) मिलाकर सानी बनाकर प्रतिदिन 3-4 बार में देना चाहिए। इससे चारे की बर्बादी कम होती है और आसानी से चारा पाचन भी हो जाता है।

युवाओं को प्रशिक्षित कर तैयार किए रोजगार के अवसर

पशुपालन से अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करना, पशु की नस्ल, रख-रखाव तथा खान-पान पर निर्भर करता है। इसलिए आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन चिडाना द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में पशुधन विकास के लिये विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम चलाये जा रहे है, जिसमें कृत्रिम गर्भाधान, पशुपालन प्रशिक्षण, कृत्रिम गर्भाधान द्वारा नस्ल सुधार, पशुस्वास्थ्य शिविर तथा पशुपोषण आदि प्रमुख हैं।

पशुपालन उद्यमी प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत, विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों के बेरोजगार युवा इस प्रशिक्षण के बाद अपना पशुपालन के माध्यम से स्वरोजगार स्थापित करते है तथा मोबाइल इनसेमिनेटर के रूप में स्वरोजगार एवं बिभिन्न प्रकार कि संस्थाओ में भी कार्य कर रहे हैं। इस प्रशिक्षण में कृत्रिम गर्भाधान, गर्भ जांच, पशुओं का बीमारियों से बचाव जैसे टीकाकरण, प्राथमिक उपचार सेवाएं, पशुपोषण तथा पशुशाला प्रवंधन आदि सम्मिलित हैं। हाल ही में आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन ने नाबार्ड के सहयोग से पानीपत जिले के 25 युवाओं को सितम्बर से नवम्बर 2020 के दौरान सफलतापूर्वक प्रशिक्षित किया।

डॉ. रावेन्द्र प्रशिक्षण प्रदान करते हुए

प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षण के दौरान

ARF ने हरियाणा के गांवों में लगाया पशुस्वास्थ्य शिविर

ARF द्वारा चलित इकाई के माध्यम से विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों में पशु स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया जाता है। इसके माध्यम से पशु स्वास्थ्य परीक्षण, बीमार पशुओं का उपचार तथा किसानों को पशु पालन में आ रही विभिन्न चुनौतियों और समस्याओं का समाधान किया जाता है। हर महीने चार पशुस्वास्थ्य शिविर अलग-अलग गांवों में लगाएं जाते हैं। इनमें कृत्रिम गर्भाधान सुविधा, पशुस्वास्थ्य समाधान एवं पशुपोषण संबंधित जानकारी पशुपालकों के साथ साझा की जाती है। चूकि दुधारू पशु के प्रजनन और दूध उत्पादन के लिए ऊर्जा और प्रोटीन के अतिरिक्त खनिज तत्वों का विशेष महत्व है। इसलिए आयुर्वेट के पशु पोषण कार्यक्रम के अंतर्गत किसानों कि अवश्यकताओ को ध्यान मै रखते हुये किसानो के घर पर खनिज मिश्रण तथा कैल्शियम आदि पहुंचाया जाता है, जिससे कि पशुओं का सम्पूर्ण विकास हो सके तथा किसान को अधिकतम दूध उत्पादन मिल सके।

पशुस्वास्थ्य शिविर

पशुस्वास्थ्य शिविर

ARF का नस्ल सुधार कार्यक्रम दिखा रहा है अपना असर

किसानों द्वारा पशुओं को गर्भधान के एक जगह से दूसरी जगह ले जाना आसान नहीं होता इसलिए ARF के माध्यम से चलित इकाई द्वारा कृत्रिम गर्भाधान की सुविधा ग्रामीण क्षेत्रों के पशुपालकों को उनके घर पर ही उपलब्ध करवाई जा रही है।

किसानों को कृत्रिम गर्भाधान के लाभ में मुख्यतः गर्मी की उचित पहचान तथा श्रेष्ठ गुणवत्ता के वीर्य द्वारा सही समय पर कराए गए गर्भाधान से गर्भधारण की डोज उचित दर पर प्राप्त होती है। किसानों को प्रजनन रिकॉर्ड रखने में सहायता मिलती है। कृत्रिम बिधि से गर्भधारण कराने के बाद किसानों को प्रजनन सांडों को रखने की आवश्यकता नहीं होती है। इसके लैंगिक क्रियाओं द्वारा संचरित रोगों से भी बचाव होता है। प्राकृतिक विधि की तुलना में इस विधि से गर्भधारण से नई सन्तति से अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है! इस बिधि मै संतति परीक्षण आरंभिक अवस्था में किया जाता है, इसलिए गर्भाधारण के कोई दुर्घटना नहीं होती। प्रतिमाह लगभग 150 कृत्रिम गर्भाधान किया जाता है।

क्लिनिक पर कृत्रिम गर्भाधान करते हुए

गांव में कृत्रिम गर्भाधान करते हुए

जैविक खेती परियोजना के दिखने लगे हैं लाभ

नाबार्ड द्वारा प्रायोजित ''जैविक खेती परियोजना'' को आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन, सोनीपत में 30 ग्राम पंचायतों में संचालित कर रही है। माह दिसंबर में जैविक खेती परियोजना में सोनीपत जिले के 30 प्रदर्शन प्रक्षेत्र के किसानों का मिट्टी नमूना एकत्रित कर एआरएफ के आधुनिक प्रयोगशाला में परीक्षण कराया गया। कुशल वैज्ञानिक एवं तकनीकी विशेषज्ञों ने कृषकों को भूमि में पोषक तत्वों की मात्रा के बारे में बताया एवं SGS India Pvt. Ltd. के माध्यम से सभी प्रदर्शन प्रक्षेत्रों को जैविक उत्पादन प्रमाण पत्र के लिए नमूना एकत्र कराया गया। कृषि विज्ञान केंद्र (सोनीपत) तथा नाबार्ड के अधिकारियों ने प्रक्षेत्रों का निरीक्षण किया।

कृषि विज्ञान केंद्र तथा नाबार्ड अधिकारियों का प्रक्षेत्र निरीक्षण

ARF के सहयोग से किसानों ने खोली अपनी कंपनी

नाबार्ड द्वारा वित्त पोषित परियोजना 'किसान उत्पादन कंपनी' का संचालन एआरएफ द्वारा दो जिलों सोनीपत एवं पानीपत में किया गया है। इसके अंतर्गत किसानों के समूह को कंपनी एक्ट में पंजीकृत कराया गया है, जिसमें 3 एफपीओ जैविक खेती, 2 एफपीओ दुग्ध उत्पादन एवं प्रसंस्करण तथा 1 एफपीओ सब्जी उत्पाद एवं अन्य फसलों के उत्पाद उत्पादन का कार्य कर रहे हैं। प्रत्येक किसान उत्पादन कंपनी में 250 से 350 किसान पंजीकृत हैं। इस परियोजना का उद्देश्य किसानों को आत्मनिर्भर बनाना तथा उनकी आमदनी में वृद्धि करना है।

ARF ने चलाया ग्रामीण स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम

नाबार्ड द्वारा सहायता प्राप्त परियोजना 'ग्रामीण स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम' के अंतर्गत एआरएफ की टीम विभिन्न ग्राम पंचायतों में जागरूकता कार्यक्रम संचालित कर रही है, जिसमें शौचालय का महत्व, साफ सफाई का महत्व, कचरे से कमाई का प्रयोग करके आमदनी का स्रोत कैसे बनायें, आदि क्षेत्रों में ग्रामीणों को जागरूक कर रही है।

ग्रामीणों को स्वच्छता अभियान के संबंध में जागरूक करते जैनेन्द्र गुप्ता

मिट्टी की जांच के लिए किसानों को किया जागरूक

किसानों की आमदनी सिर्फ फसल बेचने से ही नहीं बढ़ती अपितु खेती में होने वाली लागत को कम करके भी होती है। रासायनिक खाद एवं कीटनाशक के बढ़ते प्रयोग का ना सिर्फ किसानों की जेब पर बुरा असर पड़ता है। इसके संबंध में एआरएफ की तरफ सं डॉ. अनिल कनौजिया ने 15 दिसंबर 2020 को हरियाणा राज्य सरकार के कृषि विशेषज्ञों के साथ एक मृदा स्वास्थ्य कैंप में किसानों को जागरूक किया एवं मृदा परीक्षण में होने वाले फायदों से अवगत कराया।

डॉ. अनिल कन्नौजिया किसानों को जागरूक करते हुए

ARF से किसान क्लब के माध्यम से जुड़ने के बाद मुझे बहुत सारे कृषि एवं पशुपालन विशेषज्ञों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। मैं प्रशिक्षण लेकर अब जैविक खेती कर रहा हूं और उसे अपनी ही कंपनी ''प्रगतिशील ऑगैनिक प्रोड्यूसर कंपनी'' से बेच कर लाभ प्राप्त कर रहा हूं। मैं इस कंपनी का निर्देशक भी हूं। ARF के मार्गदर्शन एवं सहयोग के लिए मैं उनका आभारी रहूंगा।

-सुरेंद्र, डिडवाडी, पानीपत

नाबार्ड एवं ARF के सहयोग से मुझे जैविक खाद बनाने एवं जैविक खेती करने का प्रशिक्षण प्राप्त हुआ। मुझे शुरूआत में वर्मी कपोस्ट का प्रशिक्षण प्राप्त हुआ। मुझे वर्मी कम्पोस्ट पिट बनाने के लिए सहायता राशि भी प्राप्त हुई। पिछले 3 साल से मैं जैविक खेती कर रहा हूं। आज मेरी कृषि लागत पहले से बहुत कम हुई है। अब मेरी फसल कटने से पहले ही एडवांस बुकिंग हो जाती है। मुझे मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए मैं ARF का धन्यवाद करता हूं।

-जयपाल, कैथ, पानीपत

मुझे रोजगार तलाशते काफी समय हो गया था। मुझे मेरे एक दोस्त से यह जानकारी मिली कि ARF में निःशुल्क डेरी फार्मिंग का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। मैंने तुरंत यहां आकर अपना रजिस्ट्रेशन कराया और तीन महीने का डेरी फार्मिंग प्रशिक्षण प्राप्त किया। अब मुझे AI एवं पशुस्वास्थ्य संबंधी जानकारी हुई है, जिससे मैं अपने पशुओं की देखभाल खुद भी कर सकता हूं एवं पड़ोस के पशुपालकों को भी उचित सुविधा प्रदान कर आमदनी भी अर्जित कर सकता हूं। मैं निःशुल्क प्रशिक्षण के लिए ARF और नाबार्ड का आभारी रहूंगा।

-कृष्णा कुमार, नौलथा, पानीपत

आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन के मार्गदर्शन से मैंने एक एकड़ में हाइड्रोपोनिक्स विधि से तैयार धान की नर्सरी को अपने खेत में लगवाया। मुझे इस तकनीक से कई फायदे हुए। लेबर की कमी की समस्या से भी निजात मिला क्योंकि यह ट्रांसप्लांटर की मदद से आसानी से लगाया जा सकता है। खर पतवार की समस्यायें बहुत कम आई। मुझे 21 कुंतल प्रति एकड़ की उपज की प्राप्त हुई।

-मोहन, जागसी, सोनीपत